सभी विषम परिस्थितियों के बीच मतदान प्रबंध सुनिश्चित करना

विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र में मतदान प्रक्रिया को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए क्या कुछ आवश्यक है? इस प्रश्न का सरलता से उत्तर देना वास्तव में अत्यंत कठिन कार्य है। 2009 के आम चुनाव इस बात का स्पष्ट उदाहरण रहे हैं। इस विशाल एवं जटिल गणतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेकर, देश के सुदूर प्रांतों में कभी बर्फीले पहाड़ों तक पहुंचकर, कभी तपती धूप में मरुभूमि के क्षेत्रों को पार करते हुए तो कभी नदी–नालों को पार करते हुए, पूरी जिम्मेवारी के साथ जो लोग इस प्रक्रिया में शामिल हुए– उन्हीं के योगदान के फलस्वरूप गणतंत्र का दीप प्रज्वलित है।

आम चुनाव 2009 के दौरान आंध्र प्रदेश में अपने आवंटित मतदान केंद्रों तक ईवीएम के साथ जाते हुए मतदानकर्मी।

लोकसभा चुनाव 2009 पांच चरणों में पूरा हुआ था। पहले चरण का मतदान 16 अप्रैल, 2009 और पांचवें चरण का मतदान 13 मई, 2009 को हुआ। इस प्रक्रिया की विशालता इस बात से स्पष्ट होती है कि आम चुनाव, 2009 में 71,377 करोड़ मतदाताओं ने 8,34,944 मतदान केन्द्रों में 9,08,643 नियंत्रण इकाइयों तथा 11,83,543 ईवीएम के माध्यम से वोट डाले। मतदान की प्रक्रिया सुचारू, निष्पक्ष, पारदर्शी और शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न करने के लिए 47 लाख मतदानकर्मी, 12 लाख सुरक्षाकर्मी तथा 2046 पर्यवेक्षक तैनात किए गए थे। सुरक्षा कर्मियों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए 119 विशेष रेलगाड़ियों की व्यवस्था की गई थी। साथ ही, 55 हेलीकॉप्टर भी इस प्रक्रिया में शामिल किए गए थे। वोटों की गिनती 16 मई, 2009 को 1080 मतगणना केन्द्रों पर कराई गई थी जिनमें लगभग 60,000 कर्मचारी तैनात किए गए थे।

भारत के निर्वाचन आयोग ने गुजरात के गिर वन क्षेत्र में हर एक और प्रत्येक मतदाता के लिए अपने अधिकार का इस्तेमाल सुनिश्चित करने के लिए अपने प्रयासों में कोई कमी नहीं छोड़ी। गुरु भारतदासजी महाराज का एकमात्र मत एकत्र करने के लिए एक मतदान केंद्र कायम किया गया और तीन मतदानकर्मी नियुक्त किए गए।

छत्तीसगढ़ में घने जंगलों से घिरे, पर्वतीय क्षेत्र में कोरिया जिले के शेरेडन्ड गांव में दो मतदाताओं के लिए भी निर्वाचन आयोग ने मतदान की व्यवस्था की, जहां पांच किलोमीटर के दायरे में कोई और गांव नहीं था। इन दो मतदाताओं के लिए एक मतदाता केन्द्र की स्थापना की गई, जिसमें चार मतदानकर्मियों और तीन सुरक्षा कर्मियों का दल तैनात किया गया।

अरुणाचल प्रदेश में चार ऐसे मतदान केन्द्र थे, जहां प्रत्येक केंद्र में केवल तीन मतदाताओं को वोट डालना था। वहां पहुंचने के लिए मतदान कर्मियों के दलों को निकटतम हेलीपैड या सड़क मार्ग से तीन–चार दिनों तक पैदल चल कर गंतव्य पर पहुंचना पड़ा। राज्य में 690 मतदान पार्टियों को हेलीकॉप्टर द्वारा दूर–दराज के गांवों तक पहुंचाया गया। इनमें से कई गांव बर्फ से ढकी म्यांमां और चीन की सीमा के पास स्थित थे।

हिमाचल प्रदेश के कई भागों में एक–एक वोट के लिए मतदानकर्मियों के दलों का दुर्गम चढ़ाई और बर्फीली हवाओं का सामना करना पड़ा। देश का सबसे ऊंचा मतदान केंद्र लाहौल और स्पीति जिले में हिक्कम नामक स्थान पर 15000 फुट की ऊँचाई पर कायम किया गया था जहां मात्र 321 मतदाता थे। इस जिले के एक–तिहाई से अधिक मतदान–केंद्र 13,000 फुट से अधिक ऊँचाई पर कायम किए गए थे, जहां पहुंचना मतदानकर्मियों के लिए एक बड़ी चुनौती थी।

तराईयों में कड़कड़ाती ठंड के बावजूद मतदान जारी।

दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र के कारण 36 मतदान केंद्रों को अति संवेदनशील तथा 23 केंद्रों को संवेदनशील घोषित किया गया था। पश्चिम बंगाल के दार्जीलिंग जिले में मतदानकर्मियों को श्रीखोला मतदान केंद्र पर पहुंचने के लिए हिमालय में 12 किलोमीटर की चढ़ाई चढ़नी पड़ी। बाड़मेर निर्वाचन क्षेत्र 71,601 वर्ग किलोमीटर में फैला है, जिसमें बाड़मेर और जैसलमेर के रेगिस्तानी जिले शामिल हैं, जहां तापमान अधिक रहता है। इस क्षेत्र की व्यापकता को देखते हुए मेनाऊ, जेसिलिया, नेहड़ाई, तोबा, कायमकिक धाणी और राबलौओ फकीरोवाला जैसे गांवों के 2324 मतदाताओं को कवर करने के लिए 6 मोबाइल मतदान केंद्र कायम किए गए। भीषण गर्मी में मतदाताओं को मतदान के लिए लम्बी दूरी तक पैदल चलने की कठिनाई से बचाने के लिए ये उपाय किए गए।

सुन्दरवन के घने जंगलों की कच्छ झाड़ियों के बीच संकरी खाड़ियों को पार करने के लिए मतदानकर्मियों को अपने साजो–सामान के साथ नौकाओं का सहारा लेना पड़ा। 700 किलोमीटर लम्बे अन्डमान निकोबार द्वीप समूह में मतदान का आयोजन एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। कई जगहों पर मतदानकर्मियों को 35 से 40 घण्टे तक

अंडमान एवं निकोबार में 2009 के आम चुनाव में दूरदराज के क्षेत्रों में मतदान सामग्री भेजने हेतु नाव में लोड करते हुए।

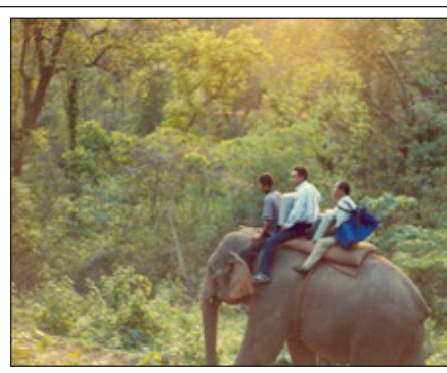

असम में 2009 के आम चुनाव के दौरान अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए हाथी की सवारी करते पार्टियों के लोग।

नौकाओं से यात्रा करनी पड़ी। लक्षद्वीप में 105 मतदान केंद्र ऐसे थे जहां केवल नौकाओं से पहुँचा जा सकता था। मिनीकॉप द्वीप पर हेलीकॉप्टर से ईवीएम पहुँचाई गईं। असम के सोनितपुर जिले में दो बैलगाड़ियॉ की सहायता ली गई क्योंकि वहॉ के रास्ते अच्छे नहीं थे। राज्य के कई भागों में मतदान–सम्बन्धी उपकरण तथा अधिकारियों के आने जाने के लिए पालतू हाथी उपयोगी साबित हुए। बोक्काइजान जिले में जंगली हाथियों के उपद्रव के कारण पॉच मतदान केंद्रों तक सामान पहुँचाने के लिए पोर्टर नियुक्त किए गए क्योंकि वहां 40 किलोमीटर तक की दूरी पैदल ही तय करनी पड़ी।

भौगोलिक चुनौतियों के साथ–साथ 79 चुनावी क्षेत्रों में नक्सलियों का दबदबा था। साथ ही, देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र में विघटनकारी तत्वों ने धमकी दे रखी थी। चुनाव आयोग ने विस्तृत योजनाए बनाई और उनका कार्यान्वयन किया। इतनी सारी चुनौतियों के बावजूद 58 प्रतिशत से अधिक लोगों ने मतदान किया और साबित किया कि गणतांत्रिक भावनाएं हमारे देश में मजबूत हैं।

स्रोतः पसूका